ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 293-294**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

बिहार में जाति और राजनीति

डॉ0 कपिल मुनि सिंह, 2. पुतुल कुमारी
समाजशास्त्र विभाग, बी0 डी0 कालेज, 2. शोध अध्येत्री– समाजशास्त्र, पाटलीपुत्र विश्वविद्यालय, पटना (बिहार) भारत

Received-17.12.2024, Revised-23.12.2024, Accepted-28.12.2024 **E-mail :** advputulkumari@gmail.com

सरांश : *भारतीय राजनीति में जाति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है और बिहार इसका एक प्रमुख उदाहरण है। बिहार की सामाजिक संरचना, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, आर्थिक असमानता और ग्रामीण समाज की प्रकृति ने यहाँ की राजनीति को गहराई से जाति से जोड़ दिया है। स्वतंत्रता के बाद से लेकर आज तक बिहार की राजनीति को समझने के लिए जाति को एक केंद्रीय कारक के रूप में देखना अनिवार्य है। बिहार में जाति न केवल सामाजिक पहचान है, बल्कि राजनीतिक शक्ति, प्रतिनिधित्व और संसाधनों के वितरण का भी माध्यम रही है।*

कुंजीभूत शब्द– सामाजिक संरचना, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, आर्थिक असमानता और ग्रामीण समाज की प्रकृति एराजनीतिक शक्ति।

परिचय– बिहार की सामाजिक संरचना और जाति व्यवस्था– बिहार की समाज व्यवस्था पारंपरिक रूप से वर्ण और जाति आधारित रही है। यहाँ समाज को मोटे तौर पर चार प्रमुख वर्गों में बाँटा जा सकता है:

1. **उच्च जातियाँ –** ब्राह्मण, भूमिहार, राजपूत, कायस्थ।
2. **पिछड़ी जातियाँ (OBC)–** यादव, कुर्मी, कोइरी, तेली आदि।
3. **अति पिछड़ी जातियाँ (EBC)–** नाई, मल्लाह, लोहार, बढ़ई आदि।
4. **अनुसूचित जातियाँ और जनजातियाँ (SC@ST)–** चमार, पासवान, दुसाध, मुसहर आदि।

औपनिवेशिक काल में भूमि व्यवस्था (जमींदारी प्रथा) ने उच्च जातियों को आर्थिक आरै राजनीतिक रूप से मजबूत किया, जबकि पिछड़ी और दलित जातियाँ हाशिए पर बनी रहीं। यही असमानता आगे चलकर राजनीतिक संघर्ष का आधार बनी।

स्वतंत्रता के बाद प्रारंभिक राजनीति (1947–1967)– स्वतंत्रता के बाद बिहार में कांग्रेस पार्टी का प्रभुत्व रहा। इस दौर मेंराजनीति मुख्यतः उच्च जातियों के हाथों में थी। मुख्यमंत्री पद और प्रशासनिक ढांचे में ब्राह्मण, भूमिहार और राजपूत जातियों का वर्चस्व था।

हालाँकि इस समय जाति खुलकर राजनीतिक मुद्दा नहीं बनी थी, लेकिन सत्ता संरचना स्पष्ट रूप से जातीय थी। पिछड़ी और दलित जातियाँ राजनीति में प्रतिनिधित्व से वंचित थीं।

1967 के बादः जाति चेतना का उदय– 1967 के बाद बिहार की राजनीति में बड़ा परिवतर्न आया। कांग्रेस के प्रभुत्व में कमी आई और गैर–कांग्रेसी सरकारों का गठन हुआ। इसी दौर में:

- पिछड़ी जातियों में राजनीतिक चेतना बढ़ी
- सामाजिक न्याय का विचार उभरा
- जाति आधारित गोलबंदी शुरू हुई

यह दौर बिहार की राजनीति में जाति आधारित राजनीति की नींव रखने वाला साबित हुआ।

समाजवादी आंदोलन और पिछड़ी जातियों का उभार– कर्पूरी ठाकुर और समाजवादः बिहार में जाति आधारित राजनीति को मजबूत करने में समाजवादी नेताओं की बड़ी भूमिका रही। कर्पूरी ठाकुर ने पिछड़ी और अति पिछड़ी जातियों को राजनीतिक मंच प्रदान किया। उनके योगदान :

- पिछड़ों के लिए आरक्षण की शुरुआत
- अति पिछड़ों को अलग पहचान
- सत्ता में गैर–उच्च जातियों की भागीदारी

कर्पूरी ठाकुर को बिहार में सामाजिक न्याय की राजनीति का जनक माना जाता है।

मंडल राजनीति और लालू प्रसाद यादव का उदय– मंडल आयोग का प्रभावः 1990 में मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू किए जाने के बाद बिहार की राजनीति में ऐतिहासिक बदलाव आया। पिछड़ी जातियों को 27 प्रतिशत आरक्षण मिलने से राजनीतिक चेतना अत्यंत तेज हुई।

लालू प्रसाद यादव का दौर– लालू प्रसाद यादव ने मंडल राजनीति को जन आंदोलन में बदल दिया। उनका प्रसिद्ध नारा था: "भूरा बाल साफ करो" (भू = भूमिहार, रा = राजपूत, बा = ब्राह्मण, ल = लाला)।

लालू प्रसाद के शासनकाल की विशेषताएँ:

- यादव और मुस्लिम गठजोड़ (MY समीकरण)
- सामाजिक न्याय पर जोर
- पिछड़ों और दलितों का राजनीतिक सशक्तिकरण

हालाँकि इस दौर में शासन, विकास और काननू –व्यवस्था को लेकर गंभीर आलोचनाएँ भी हुईं।

दलित राजनीति और रामविलास पासवान– बिहार में दलित राजनीति का प्रमुख चेहरा रामविलास पासवान रहे। उन्होनें:

- दलितों की राष्ट्रीय राजनीति में आवाज बुलंद की
- लोक जनशक्ति पार्टी (LJP) की स्थापना की
- अनुसूचित जातियों को सत्ता सौदेबाजी में महत्वपूर्ण बनाया

दलित राजनीति बिहार में स्वतंत्र शक्ति के रूप में उभरी, हालाँकि यह जाति के भीतर भी उप–जातियों में विभाजित रही।

नीतीश कुमार और नई सामाजिक इंजीनियरिंग– कुर्मी–कोइरी–अति पिछड़ा समीकरणः 2005 के बाद नीतीश कुमार के

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

नेतृत्व में बिहार की राजनीति में नया मोड़ आया। उन्होनें:

- अति पिछड़ी जातियों को राजनीतिक भागीदारी दी
- महिलाओं के लिए 50% पंचायत आरक्षण
- विकास और सुशासन को राजनीतिक एजेंडा बनाया

नीतीश कुमार ने जाति आधारित राजनीति को पूरी तरह खत्म नहीं किया, बल्कि उसे विकास की राजनीति के साथ संतुलित किया।

जाति आधारित चुनावी व्यवहार– बिहार मे ं चुनावी राजनीति आज भी काफी हद तक जाति पर आधारित है:

- उम्मीदवार चयन में जाति महत्वपूर्ण
- मतदान व्यवहार जातीय पहचान से प्रभावित
- गठबंधन जातीय गणित पर आधारित

हालाँकि शहरीकरण, शिक्षा और मीडिया के प्रभाव से यह प्रवृत्ति धीरे–धीरे कमजोर हो रही है।

जाति जनगणना और समकालीन राजनीति– हाल के वर्षों में बिहार में जाति जनगणना एक बड़ा राजनीतिक मुद्दा बना है। इसके समर्थकों का तर्क है कि:

- वास्तविक सामाजिक–आर्थिक स्थिति का पता चलेगा
- नीतियाँ अधिक न्यायसंगत बनेंगी, विरोधियों का मानना है कि:
- इससे जातीय विभाजन बढ़ेगा
- विकास के मुद्दे पीछे छूटेंगे,

सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव– सकारात्मक प्रभाव:

- वंचित वर्गों को राजनीतिक प्रतिनिधित्व
- सामाजिक न्याय को बढ़ावा
- लोकतंत्र का विस्तार

नकारात्मक प्रभाव:

- जातीय ध्रुवीकरण
- विकास की राजनीति का ह्रास
- भ्रष्टाचार और भाई–भतीजावाद

बदलती प्रवृत्तियाँ– आज बिहार की राजनीति में कछु नए बदलाव दिख रहे हैं:

- युवा मतदाता जाति से आगे सोचने लगे हैं
- रोजगार, शिक्षा और विकास प्रमुख मुद्दे बन रहे हैं
- फिर भी जाति पूरी तरह अप्रासंगिक नहीं हुई है।

निष्कर्ष– बिहार की राजनीति को जाति से अलग करके नहीं समझा जा सकता। जाति ने जहाँ एक ओर सामाजिक न्याय और राजनीतिक सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया, वहीं दूसरी ओर इसने राजनीति को सीमित और विभाजित भी किया। आज आवश्यकता है कि जाति की वास्तविकताओं को स्वीकार करते हुए विकास, समानता और सुशासन की राजनीति को आगे बढ़ाया जाए। तभी बिहार एक समावेशी और प्रगतिशील राजनीतिक संस्कृति की ओर बढ़ सकता है।

*****